*वित्तीय क्षमता को आगे ले जाना : नवोन्मेष का पैमाना एवं प्रभाव**

दीपाली पंत जोशी

दोस्तो, वित्तीय साक्षरता सम्मेलन की दसवीं वर्षगांठ के अवसर पर यहां आकर मैं सम्मानित महसूस कर रही हूं। यह अवसर प्रदान करने के लिए मैं सिटी और फाइनेंसियल टाइम्स के साथ ही भारतीय अनुभव को साझा करने का अवसर प्रदान करने के लिए मेरे दोस्त डेविड फिलिंग को भी धन्यवाद देती हूं। डेविड, मैं इस बात की पुष्टि करती हूं कि हम जंगली दौर से निकल चुके हैं। जैसा कि इस कक्ष में उपस्थित सभी लोग जानते हैं कि वैश्विक वित्तीय संकट के मद्देनजर वित्तीय साक्षरता, संपूर्ण विश्व में नीति-निर्माताओं का ध्यान केंद्रित करने वाला मुद्दा बनकर उभरी है।

अलग-अलग लोगों के लिए वित्तीय साक्षरता का अर्थ अलग-अलग होता है। भारत में हमने वित्तीय साक्षरता को अलग ढंग से लिया है जो व्यक्तिगत एवं व्यापक रूप से समाज के कल्याण को सबसे बढ़िया स्तर तक ले जाने के लिए वित्तीय साक्षरता के माध्यम से वित्तीय समावेशन को और बढ़ाने के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पर आधारित है। वित्तीय साक्षरता को उत्तरोत्तर बढ़ावा देने के बावजूद बहुत सी चुनौतियां बनी हुई हैं। इनमें निम्नलिखित शामिल हैं - (i) वंचित विशाल क्षेत्र जिनमें से बहुत से लोग निरक्षर, विशेषरूप से ग्रामीण या दूरस्थ क्षेत्रों में जहां पर भौतिक रूप से पहुंचना कठिन है, हो सकते हैं; (ii) वित्तीय विनियामकों में बेहतर पर्यवेक्षी क्षमताओं की जरूरत; (iii) औपचारिक प्रणाली का उपयोग करने में असमर्थ लोगों को ऋण, बीमा एवं विप्रेषण की सुविधाएं प्रदान करने वाले व्यापक 'अनौपचारिक' बाजारों से निपटना।

सम्मेलन की यह दसवीं वर्षगांठ है। इन 10 वर्षों में भारत में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि हमारे पास विशाल बैंकिंग प्रणाली है जिसमें सरकारी क्षेत्र के बैंकों के अलावा निजी क्षेत्र के बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं सहकारी संस्थाएं शामिल हैं जिनका फैलाव व्यापक है। बहरहाल, अब ये बैंक परस्परसंचालनीय कोर बैंकिंग प्रणाली के प्लेटफॉर्म के अंतर्गत कार्य कर रहे हैं जिसके कारण हम भौगोलिक तथा दूरी एवं स्वैच्छिक पहुंच की बाधाओं से निपटने में लंबी छलांग लगाने के लिए प्रौद्योगिकी का काफी अधिक प्रयोग करने में सक्षम हुए हैं। बैंक शाखाएं खोलने के नियमों को हमने काफी उदार बना दिया है। हमने बैंकिंग कॉरेस्पांडेंट की सेवाओं की अनुमति प्रदान कर दिया है। एयरटेल एवं वोडाफोन जैसी मोबाइल कंपनियां बैंकिंग कॉरेस्पांडेंट के रूप में बैंकों की साझेदार बनकर कार्य कर रही हैं। हमने केवाईसी के कठोर मानकों को भी उदार बना दिया है ताकि गरीब या पलायन करने वाले लोगों के लिए आसानी हो सके। हमने ई-केवाईसी की सुविधा को सक्रिय कर दिया है। हमारा अद्वितीय पहचान पत्र, आधार हमें सामाजिक लाभों के अंतरण के डिजिटाइजेशन को संभव बनाने में सक्षम बना रहा है। इससे सेवा प्रदाताओं के लिए निरंतर राजस्व प्राप्ति का मार्ग खुलेगा और वित्तीय क्षमता के निर्माण में हमें बहुत बड़ी मदद मिलेगी।

भारत में वित्तीय शिक्षा की भूमिका

वित्तीय शिक्षा के साथ में वित्तीय सुलभता के और अधिक होने से वित्तीय रूप से जिम्मेदार नागरिक तैयार होते हैं। वित्तीय सुलभता एवं वित्तीय शिक्षा के इस मिश्रण से समुचित बाजार व्यवहार एवं विवेकसम्मत विनियम के लिए आधार तैयार होता है। लोगों के वित्तीय व्यवहार में सुधार करना एक दीर्घावधि नीतिगत प्राथमिकता है। वित्तीय शिक्षा की शुरुआत बचपन से करके उसे वयस्कता के दौरान जारी रखने की जरूरत है।

वित्तीय समावेशन के लक्ष्य को पाने के क्रम में हमारे वित्तीय साक्षरता के प्रयासों की दिशा प्राथमिक रूप से स्थानीय भाषाओं में, देश भर में बड़े जागरूकता अभियान चलाकर वित्तीय विवेक के सहज संदेशों का प्रसार करने की ओर उन्मुख रही है। इसके अंतर्गत बैंकों, बीमा तथा पेंशन निधियों को संभालने वाली और अन्य संस्थाओं की ओर से भी वित्तीय समावेशन के जोशीली योजनाएं लाई जा रही हैं। यह नोट करना महत्त्वपूर्ण है कि वित्तीय साक्षरता के लिए साक्षर होना कोई अनिवार्य पूर्व-आवश्यकता नहीं है क्योंकि मूलभूत वित्तीय संदेश लिखित माध्यमों पर निर्भर हुए बिना भी अन्य वैकल्पिक माध्यमों से भी प्रेषित किए जा सकते हैं। अपने वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से हम जिन मूलभूत संदेशों का प्रसार करने का प्रयास करते हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

- बचत क्यों करें
- नियमित रूप से बचत क्यों करें
- बचत राशि बैंकों में क्यों जमा करें

* 7 दिसंबर 2013 को हांगकांग में आयोजित सिटी-फाइनेंसियल टाइम्स वित्तीय शिक्षा सम्मेलन की 10वीं वर्षगांठ के दौरान भारतीय रिज़र्व बैंक की कार्यपालक निदेशक डॉ. (श्रीमती) दीपाली पंत जोशी द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार।

- उधार अपनी हदों के भीतर क्यों लें
- उधार बैंकों से क्यों लें
- आय अर्जन के उद्देश्यों के लिए उधार क्यों लें
- ऋण क्यों चुकाएं
- ऋण समय पर क्यों चुकाएं
- हमें बीमा की जरूरत क्यों है
- जीवन में कार्यशीलता समाप्त होने के बाद आपको नियमित आय के स्रोत - पेंशन की जरूरत क्यों पड़ेगी
- वृद्धावस्था में पेंशन के लिए जीवन की अर्जक अवधि में आपको नियमित रूप से पैसों की बचत क्यों करना चाहिए
- ब्याज क्या है? साहूकार किस प्रकार से बहुत अधिक ब्याज दर वसूलते हैं?

भारत में वित्तीय रूप से वंचित बड़ी संख्या में लोगों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जोड़ने की चुनौती है, इसलिए आधार स्तर पर हमारी रणनीति का केंद्र बिंदु मूलभूत वित्तीय उत्पादों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करना रहा है। भारत में वित्तीय साक्षरता को प्रोत्साहित करने में रिज़र्व बैंक एवं अन्य साझेदारों द्वारा उठाए गए कुछ कदम निम्नलिखित हैं :

रिज़र्व बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दूरस्थ गांवों में **आउटरीच दौरे** : इन दौरों का उद्देश्य वास्तविक स्थिति को समझना, औपचारिक वित्तीय प्रणाली से जुड़े रहने के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाना तथा भारतीय रिज़र्व बैंक के कामकाज के बारे में सूचना प्रसारित करना है।

भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट : हमने भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट में वित्तीय शिक्षा का एक लिंक स्थापित किया है जिसमें अंग्रेजी एवं हिंदी सहित 11 क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री उपलब्ध है। इसमें बच्चों के एि मुद्रा एवं बैंकिंग से संबंधित चित्र कथाएं, फिल्में, वित्तीय योजना के संबंध में संदेश वित्तीय शिक्षा से संबंधित खेल तथा ग्राहकों की शिकायत के निपटान के लिए बैंकिंग ऑम्बुड्समैन प्रणाली को सुलभ बनाने के लिए लिंक भी दिए गए हैं। संचार विभाग द्वारा तैयार की गई कुछ प्रचलित चित्र कथाएं हैं - मनी कुमार, राजू एंड द मनी ट्री। इसके अलावा कुछ फिल्में हैं जो सहज रूप से वित्तीय शिक्षा के संबंध में बच्चों को संदेश दे सकती हैं। संचार विभाग स्कूली बच्चों के समूहों का आतिथ्य भी करता है एवं उनको भारतीय रिज़र्व बैंक के कामकाज की जानकारी देता है तथा सरल वित्तीय धारणाओं की जानकारी प्रदान करता है।

अंतर-स्कूल प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता : वित्तीय शिक्षा के प्रयासों के अंतर्गत 'कम उम्र में लोगों को सिखाओ' की अपनी रणनीति के अनुसार रिज़र्व बैंक ने 2012 में अखिल भारतीय अंतर-स्कूल प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आरबीआईक्यू की शुरुआत की। यह प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, रिज़र्व बैंक एवं देश भर के स्कूलों में दाखिल युवा विद्यार्थियों के तबके के बीच 'सेतु' तैयार करने के लिए रिज़र्व बैंक के इतिहास एवं भूमिका, बैंकिंग तथा वित्त, अर्थशास्त्र, समसामयिक मामलों आदि के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने और संवेदना बढ़ाने के माध्यम से वित्तीय शिक्षा के प्रसार के लिए एक प्रभावी मंच की तलाश करती है।

वित्तीय साक्षरता के प्रसार, वित्तीय उत्पादों के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने तथा बैंकों के ग्राहकों के लिए सलाह की सुविधा उपलब्ध कराने के लक्ष्य के साथ विभिन्न बैंकों ने **वित्तीय साक्षरता केंद्र (एफएलसी)** प्रारंभ किया है। 30 सितंबर 2013 की स्थिति में देश में 800 से अधिक वित्तीय साक्षरता केंद्र विद्यमान हैं। दुर्गम क्षेत्रों के लिए बैंक वित्तीय साक्षरता सेवा वैन का प्रयोग कर रहे हैं।

टाउन हाल कार्यक्रम : इन कार्यक्रमों का आयोजन देश भर में किया जाता है। इसमें श्रेणी II के शहर तथा छोटे शहर भी शामिल हैं। ये कार्यक्रम वाणिज्य बैंकों और अन्य साझेदारों के बीच नजदीकी बढ़ाते हैं।

शैक्षणिक संस्थानों, वित्तीय जागरूकता कार्यशालाओं/ हैल्पलाइनों, किताबों, प्रचार-पुस्तिकाओं एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा वित्तीय साक्षरता संबंधी प्रकाशनों, वित्तीय बाजार के प्रतिभागियों आदि के बीच संबंध स्थापित करने के माध्यम से विशाल मीडिया कैंपेन प्रारंभ किए गए हैं।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा चलाए जाने वाले वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से **क्षमता निर्माण** का प्रयास किया जाता है।

जागरूकता अभियान - प्रचार-पुस्तिका, चित्रकथाओं के वितरण, नाटक एवं नौटंकी खेलने, स्थानीय मेलों में स्टॉल की व्यवस्था करनें, प्रदर्शनियों, प्रेस द्वारा आयोजित सूचना/साक्षरता

कार्यक्रमों में सहभागिता करने के माध्यम से जागरूकता फैलाने के प्रयास किए जाते हैं। इसी प्रकार से, वित्तीय अनिश्चितता एवं जोखिम के समय में जीवन एवं गैर-जीवन बीमा उत्पादों के फायदों के बारे में लोगों को शिक्षित करना महत्त्वपूर्ण है।

वित्तीय शिक्षा के प्रसार के लिए भारत में संस्थागत ढांचा

अब, वित्तीय साक्षरता के प्रसार के लिए भारत में स्थापित किए गए संस्थागत ढांचे की बात करते हैं। मैं उल्लेख करना चाहूंगी कि हम उन बहुत कम देशों में से एक हैं जहां पर वित्तीय समावेशन के विस्तार तथा वित्तीय साक्षरता के लिए *अन्य बातों के अलावा* केंद्र के वित्त मंत्री की अध्यक्षता में शीर्ष संस्था, नामतः वित्तीय स्थिरता एवं विकास परिषद (एफएसडीसी), कार्यरत है जिसमें वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों के सभी प्रमुखों की सदस्यता अनिवार्य की गई है। अतः हम शीर्ष स्तर पर रणनीतियों को स्वीकार करते हैं। वित्तीय स्थिरता एवं विकास परिषद के तत्वाधान में वित्तीय शिक्षा की राष्ट्रीय कार्ययोजना (एनएसएफई) तैयार की गई है। इस रणनीति में वित्तीय सेवाओं की उपलब्धता, विभिन्न प्रकार के उत्पादों एवं उनके गुणों, ज्ञान को जिम्मेदार वित्तीय व्यवहार के रवैये में परिवर्तन लाना और वित्तीय सेवाओं के उपभोक्ताओं को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों को समझने में समर्थ बनाने के बारे में उपभोक्ताओं के बीच जागरूकता उत्पन्न करने और उन्हें शिक्षित करने के उपायों पर विचार किया गया है। इस रणनीति में लोगों, वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों, शैक्षणिक संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों, वित्तीय क्षेत्र की संस्थाओं, बहु-पक्षीय अंतरराष्ट्रीय प्रतिभागियों एवं सरकारों का केंद्र और राज्य -दोनों स्तरों पर सक्रिय रूप से सहभागी होना अनिवार्य किया गया है।

वित्तीय शिक्षा की राष्ट्रीय कार्ययोजना

हमारी राष्ट्रीय कार्ययोजना में अपने विशाल वित्तीय शिक्षा अभियान के लिए हमने पांच वर्ष की समय सीमा तय की गई है। इसका उद्देश्य 500 मिलियन वयस्क लोगों से प्रारंभिक संपर्क स्थापित करना और उनको प्रमुख बचतों, सुरक्षा तथा निवेश से संबंधित उत्पादों के बारे में शिक्षित करना है ताकि वे विवेकसम्मत वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम बन सकें। इस कार्यक्रम में उपभोक्ता संरक्षण एवं देश में उपलब्ध शिकायत निवारण प्रणाली के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने का लक्ष्य भी सन्निहित है। मूलभूत वित्तीय शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक स्तर के स्कूली पाठ्यक्रम में शामिल करने का लक्ष्य है। ऐसा इस तर्क के आधार पर किया जा रहा है कि वित्तीय शिक्षा का सबसे प्रभावी तरीका उसे पाठ्यक्रम की सामान्य विषय-वस्तु में जोड़ देना है। तदनुसार, इस तरह की संकल्पनाओं को स्कूली पाठ्यक्रम में समाहित करने के लिए हम राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान परिषद (एनसीईआरटी) जैसी पाठ्यक्रम निर्धारित करने वाली संस्थाओं, केंद्रीय उच्चतर शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) जैसे शैक्षणिक बोर्ड, केंद्र एवं राज्य सरकारों से संपर्क कर प्रयासरत हैं।

वित्तीय शिक्षा की राष्ट्रीय कार्ययोजना के लक्ष्यों में से एक विभिन्न हिस्सेदारों की ओर से उनकी वित्तीय शिक्षा की पहलों के तहत दिए जाने वाले संदेशों को मानक रूप प्रदान करना है। वित्तीय शिक्षा की राष्ट्रीय कार्ययोजना के दस्तावेज में विशिष्ट सरल संदेशों को चिह्नित किया गया है, जिनका उल्लेख मैंने अपने भाषण में पहले किया है, जैसे कि बचत क्यों करें, निवेश क्यों करें, बीमा क्यों कराएं, बचत राशि बैंकों में जमा क्यों करें, उधार अपनी क्षमताओं के अंदर क्यों लें, समय पर ऋण चुकता क्यों करें, आय सृजन के लिए ऋण क्यों लें, ब्याज क्या है और साहूकार किस प्रकार से बहुत अधिक दर पर ब्याज लेते हैं आदि। यह तथ्य मान्यताप्राप्त है कि मानकीकरण से विभिन्न स्रोतों से लक्षित लोगों तक पहुंचने वाले संदेशों में एकरूपता सुनिश्चित होगी और वे अधिक लक्ष्योन्मुख एवं सशक्त होंगे।

समन्वित रुख - वित्तीय शिक्षा के माध्यम से वित्तीय समावेशन

हमने इस दिशा में थोड़ा कार्य पहले ही कर लिया है। कम आय एवं साक्षरता के निम्न स्तर वाली वित्तीय रूप से वंचित जनसंख्या को औपचारिक वित्तीय प्रणाली से समन्वित करने के लिए हमने बड़े पैमाने पर एक वित्तीय साक्षरता कार्यक्रम तैयार किया है। यह कार्यक्रम बैंकों द्वारा स्थापित किए गए हमारे वित्तीय साक्षरता केंद्रों के माध्यम से चलाया जाता है जिनकी संख्या लगभग 800 है। इन प्रयासों को बैंकों की लगभग 40,000 ग्रामीण शाखाओं द्वारा प्रत्येक माह खुले स्थानों पर एकसाक्षरता कैंप के माध्यम से और बढ़ाया जाएगा। इसके अलावा, हम राज्य स्तर पर बनाए गए आधारभूत ढांचे, जिसमें शीर्ष स्तर पर बैंकरों की राज्य स्तरीय समिति (एसएलबीसी) को लीड जिला प्रबंधकों (एलडीएम) से जिला स्तर पर बढ़िया सहयोग मिलता है, को और मजबूत बनाएंगे। वित्तीय साक्षरता केंद्र खुले स्थानों पर साक्षरता कैंपों का आयोजन करते हैं। तीन माह के दौरान आयोजन के तीन चरण होते हैं जिसके अंतर्गत जागरूकता उत्पन्न करने के साथ ही साथ साक्षरता कैंपों के दौरान खाते भी खोले जाते हैं। इस कार्यक्रम को जागरूकता उत्पन्न करने तथा साथ ही साथ उपलब्धता सुलभ कराने के माध्यम से वित्तीय समावेशन के समन्वित रुख के कारण भी वास्तविकता के धरातल पर अच्छा प्रतिसाद मिला है।

वित्तीय साक्षरता कैंपों के दौरान लक्षित लोगों, जो वित्तीय रूप से वंचित हैं, तक पहुंचने वाले संदेशों की एकरूपता सुनिश्चित करने

के लिए हमने समग्र वित्तीय साक्षरता की सामग्री जारी की है जिसमें वित्तीय साक्षरता गाइड, वित्तीय डायरी एवं बचत कैसे करें विषय पर बहुत सरल संदेशों का समावेश करने करने वाल 16 प्रचार-पुस्तिकाओं का समुच्चय शामिल है। हम सुस्पष्ट रूप से यह बताते हैं कि - सभी लोग दो कप चाय पीना कम कर सकते हैं ! बैंक आएं, समृद्धि पाएं इत्यादि।

उपसंहार

स्कूल स्तर पर वित्तीय कुशलता का शिक्षण प्रारंभ करना महत्त्वपूर्ण है किंतु वित्तीय जानकारी को प्राप्त करना और उसे बनाए रखना जीवन भर चलने वाला काम है। लोगों को जो वित्तीय निर्णय लेने होते हैं, उनके प्रकार जीवन की राहों में बदलते रहते हैं और इस प्रकार से हम जीवन के सभी चरणों में अन्य साझेदारों की मदद से वित्तीय शिक्षा की तत्काल उपलब्धता सुनिश्चित करने की कोशिश कर रहे हैं। इसके अलावा, निर्णय लेने के समय उपभोक्ताओं को प्रासंगिक, सटीक एवं भरोशेमंद वित्तीय सूचना आवश्यक रूप से तत्काल उपलब्ध होना चाहिए।

वित्तीय शिक्षा के माध्यम से हम लोगों को वित्त के बारे में बेहतर निर्णय लेने के लिए जरूरी ज्ञान एवं कुशलता उपलब्ध कराने की कोशिश करते हैं। उपभोक्ता संरक्षण के माध्यम से हम नुकसानदेह प्रथाओं और गलत वित्तीय निर्णय लेने के लिए प्रेरित करने वाली बेकार जानकारियों से लोगों का बचाव कर सकते हैं। हमें यकीन है कि इन दो लक्ष्यों को प्राप्त कर लेने से सभी संबंधित लोग आर्थिक रूप से सशक्त होंगे।

भारत में बहुत से उपाय किए गए हैं और किए जा रहे हैं किंतु कार्य की विशालता के कारण बहुत से क्षेत्रों में अभी भी काम किया जाना शेष है। वित्तीय साक्षरता के विस्तार के लिए सरकार और विनियामक संस्थाओं के अलावा सिविल सोसायटी तथा अन्य साझेदारों को भी इसमें शामिल करने की आवश्यकता है। व्यापक वित्तीय निरक्षरता से पता चलता है कि हमें अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। इस बारे में भी संशय बना हुआ है कि क्या वित्तीय साक्षरता से व्यवहार में सचमुच परिवर्तन होता है। हाल के कुछ शोध पत्रों में कहा गया है कि इससे व्यवहार में परिवर्तन नहीं होता और यह एक बढ़िया पहेली बन गई है जहां घोड़े को तालाब तक ले जाया जाता है किंतु वह पानी नहीं पी सकता है ! विश्व बैंक में हमारे शोधकर्ता बिलाल जिआ, उनके सहकर्मियों के साथ मैंने रात्रि के भोजन के समय इस मुद्दे पर विस्तृत चर्चा की और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि लक्षित उपायों के ठीक ढ़ंग से काम करने का भेद उचित वितरण माडॅल में निहित है।

भारतीय अनुभवों और वित्तीय क्षमता को बढ़ाने के लिए हमारे द्वारा किए जा रहे कुछ काम, नवोन्मेषों की तादात तथा इस प्रक्रिया के प्रभावों को आप लोगों से साझा करने का अवसर प्रदान करने के लिए मैं इस सम्मेलन के आयोजकों को एक बार फिर से धन्यवाद देती हूं। हमारा किसी विशेष मॉडल के प्रति आग्रह नहीं है। हम यकीनन यह मानते हैं कि प्रौद्योगिकी की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होना है और हम नवोन्मेषी मॉडलों की गंभीरता से तलाश कर रहे हैं। इस तरह के सम्मेलन नए विचारों को उत्पन्न करने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं, जिनसे विचारों में स्पष्टता आती है तथा विभिन्न साझेदारों के बीच उद्देश्य स्पष्ट करने में मदद मिलती है। सम्मेलन से एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने के विशेष अवसर मिलते हैं और मुझे सचमुच यह उम्मीद है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से वित्तीय साक्षरता का व्यापक प्रसार होगा। आम आदमी जानकारीपूर्ण वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम होगा और इस प्रक्रिया में वैश्विक वित्तीय बाजार स्थल अधिक स्थायी क्षेत्र बनेगा।

सम्मेलन की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं और मैं उम्मीद करता हूं कि सम्मेलन के दौरान आप लोगों के विचार-विमर्श से जानकारी में बहुत इज़ाफा होगा। यह भी उम्मीद है कि बेहतर दुनिया के निर्माण हेतु कार्य की ये प्रक्रियाएं जारी रहेंगी।

इस खूबसूरत दोपहर में मुझे यहां आमंत्रित करने के लिए फाइनेंसियल टाइम्स के जेफ वैगनर, एशिया पेसिफिक सिटी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी, स्टीफन बर्ड एवं फाइनेंसियल टाइम्स, एशिया के संपादक डेविड पिलिंग को मेरा धन्यवाद। धैर्य पूर्वक सुनने के लिए धन्यवाद।